বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়
VIDYASAGAR UNIVERSITY

Question Paper

B.A. General Examinations 2020
(Under CBCS Pattern)
Semester - V
Subject: SANSKRIT
Paper : DSE 1A-T / 2A-T

Full Marks : 60
Time : 3 Hours

Candiates are required to give their answer in their own words as far as practicable.
The figures in the margin indicate full marks.

Philosophy Religion and Culture in Sanskrit Tradition

केषाञ्चन **त्रयाणामुत्तरं** देयम्। $20 \times 3 = 60$

যে-কোনো **তিনটি** প্রশ্নের উত্তর দাও।

1. श्रीमद्भगवद्गीतायाः द्वादशाध्यायानुसारं भगवतः प्रियभक्तानां लक्षणानि वर्णयत।

   শ্রীমদ্ভগবদগীতার দ্বাদশ অধ্যায় অনুসারে ভগবানের প্রিয়ভক্তদের লক্ষণগুলি বর্ণনা কর।

2. भारतीयधर्मदर्शनानुसारेण ईश्वरस्य स्वरूपं व्याख्यायताम्।

   ভারতীয় ধর্ম ও দর্শনানুসারে ঈশ্বরের স্বরূপ ব্যাখ্যা কর।

3. को नाम संस्कारः ? संस्काराणां विभागाः संक्षेपेण आलोच्यन्ताम्।

   সংস্কার কি? সংস্কারের বিভাগগুলি সংক্ষেপে আলোচনা কর।

Vidyasagar University

4. प्रकृतिवर्णनपुरस्सरं गुणत्रयं व्याख्येया:।

   প্রকৃতির স্বরূপ বর্ণনাপূর্বক গুণত্রয় ব্যাখ্যা কর।

5. टीका: लिख्यान्ताम्—महायज्ञ:, पुरुषार्थ:

   টীকা লেখ—মহাযজ্ঞঃ, পুরুষার্থঃ

6. धर्मशब्दस्य कोऽर्थ: ? स: कतिविध: ? के च ते ? वाणप्रस्थस्य स्वधर्म विस्तरेण लिखत।

   ধর্ম শব্দের অর্থ কি? সেই ধর্ম কত প্রকার ও কি কি? বাণপ্রস্থের স্বধর্ম বিস্তৃতভাবে লেখ।

Indian Perspectives in Personality Development

यथेच्छं प्रश्नत्रयं समाधेयम्। $20 \times 3 = 60$

যে-কোনো **তিনটি** প্রশ্নের উত্তর দাও।

1. गीतानुसारेण स्वधर्मविकासस्य, तस्य सामाजिकीकरणस्य च उपाय: सम्यगालोच्यताम्।

   গীতা অনুসারে স্বধর্ম বিকাশ এবং তার সামাজিকী করণের উপায় সম্যক আলোচনা কর।

2. श्रीमद्भगवद्गीतानुसारेण आत्मतत्त्वविषय: आलोच्यताम्।

   শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা অনুসারে আত্মতত্ত্ব বিষয়টি আলোচনা কর।

3. उदाहरणपूर्वकं व्यक्तिभिन्नताया: कारणं प्रकारश्च प्रदर्श्येताम्।

   উদাহরণসহ ব্যক্তিভিন্নতার কারণ ও প্রকার দেখাও।

4. गीतायामुल्लिखित: आचरणविधि: तत्परिमार्जनपद्धतयश्च पर्यालोचयन्तु।

   গীতায় উল্লিখিত আচরণবিধি ও পরিমার্জন পদ্ধতিগুলি পর্যালোচনা কর।

5. गीतानुसारेण क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्मध्ये पार्थक्यं प्रदर्शय।

   গীতা অনুসারে ক্ষেত্রক্ষেত্রজ্ঞের মধ্যে পার্থক্য দেখাও।

6. व्यक्ति:व्यक्तित्वम् आत्मतत्त्वञ्च वैदिकसाहित्यानुसारेण सोदाहरणं आलोच्यन्ताम्।

   বৈদিক সাহিত্য অনুসারে ব্যক্তি, ব্যক্তিত্ব এবং আত্মতত্ত্ব বিষয়গুলি উদাহরণযোগে আলোচনা কর।

Vidyasagar University